

Rapid Fire (करेंट अफेयर्स): 27 सतिंबर, 2021

पंडति दीनदयाल उपाध्याय

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पंडति दीनदयाल उपाध्याय की 105वीं जयंती पर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि 'उन्होंने अपना जीवन राष्ट्र निर्माण में समर्पित कर दिया था।' पंडति दीनदयाल उपाध्याय का जन्म 25 सतिंबर, 1916 को मथुरा ज़िले के नगला चंद्रभान गाँव में हुआ था। वे एक दार्शनिक, समाजशास्त्री, अर्थशास्त्री एवं राजनीतिज्ञ थे। इनके द्वारा प्रस्तुत दर्शन को 'एकात्म मानववाद' कहा जाता है, जिसका उद्देश्य एक ऐसा 'सर्वदेशी सामाजिक-आर्थिक मॉडल' प्रस्तुत करना था जिसमें विकास के केंद्र में मानव हो। वर्ष 1942 में वे 'राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ' में एक पूर्णकालिक कार्यकर्ता के रूप में शामिल हुए। इसके पश्चात् वर्ष 1940 के दशक में उन्होंने लखनऊ से 'राष्ट्र धर्म' नाम से एक मासिक पत्रिका की शुरुआत की, जिसका उद्देश्य हदित् राष्ट्रवाद की विचारधारा का प्रसार करना था। इसके बाद उन्होंने 'पांचजन्य' और 'सर्वदेश' जैसी पत्रिकाओं की भी शुरुआत की। वर्ष 1967 में जनसंघ के अध्यक्ष के रूप में चुने जाने के एक वर्ष बाद पटना में एक ट्रेन यात्रा के दौरान अज्ञात कारणों के चलते उनकी मृत्यु हो गई।

वशिव पर्यटन दविस

प्रतिवर्ष 27 सतिंबर को 'वशिव पर्यटन संगठन' (UNWTO) की स्थापना को चहिनति करने हेतु 'वशिव पर्यटन दविस' का आयोजन किया जाता है। 'वशिव पर्यटन संगठन' की स्थापना इसी दिनि वर्ष 1980 में वैश्विक स्तर पर सामाजिक-सांस्कृतिक, राजनीतिक और आर्थिक मूल्यों और अंतरराष्ट्रीय समुदाय के विकास में पर्यटन की भूमिका को रेखांकित करने के उद्देश्य से की गई थी। वर्तमान में 'वशिव पर्यटन संगठन' संयुक्त राष्ट्र की एजेंसी के रूप में कार्यरत है, जो सतत एवं सार्वभौमिक रूप से सुलभ पर्यटन को बढ़ावा देने हेतु उत्तरदायी है। मौजूदा महामारी के बाद रकिवरी के दौर में वैश्विक स्तर पर पर्यटन को बढ़ावा देना काफी महत्त्वपूर्ण है। ज्ञात हो कि बीते वर्ष महामारी के कारण 90% वशिव धरोहर स्थल बंद हो गए थे, जिसके परिणामस्वरूप ग्रामीण समुदायों के अधिकांश युवा बेरोज़गार गए। कई विशेषज्ञ मानते हैं कि विकासशील देशों में गरीबी का मुकाबला करने हेतु 'पर्यटन क्षेत्र' एक महत्त्वपूर्ण उपकरण के तौर पर कार्य कर सकता है। वर्ष 2021 के लिये 'वशिव पर्यटन दविस' की थीम है- 'समावेशी विकास हेतु पर्यटन'।

वशिव फारमाससिट दविस

दुनिया भर में प्रतिवर्ष 25 सतिंबर को स्वास्थ्य में सुधार हेतु 'फारमाससिट' की भूमिका को रेखांकित करने के लिये 'वशिव फारमाससिट दविस' का आयोजन किया जाता है। वर्ष 2021 के लिये 'वशिव फारमाससिट दविस' की थीम है- 'फारमेसी: ऑलवेज़ टरस्टेड टू योर हेल्थ'। दुनिया भर में फारमाससिट, आम लोगों को बेहतर दवाएँ प्राप्त करने में मदद करते हैं और उन्हें स्थानीय स्तर पर चिकित्सीय सलाह भी प्रदान करते हैं। ज्ञात हो कि इंटरनेशनल फारमास्युटिकल फेडरेशन (FIP), जो कि फारमाससिट और फारमास्युटिकल वैज्ञानिकों के राष्ट्रीय संघों का वैश्विक महासंघ है, 25 सतिंबर, 1912 को अस्तित्व में आया था। वशिव फारमाससिट दविस की स्थापना वर्ष 2009 में इस्तांबुल (तुर्की) में 'वर्ल्ड कॉन्ग्रेस ऑफ फारमेसी एंड फारमास्युटिकल साइंसेज़' में इंटरनेशनल फारमास्युटिकल फेडरेशन (FIP) काउंसिल द्वारा की गई थी।

ईश्वर चंद्र वदियासागर

26 सतिंबर, 2021 को देश भर में समाज सुधारक और शक्तिवाद ईश्वर चंद्र वदियासागर की 201वीं जयंती मनाई गई। ईश्वर चंद्र वदियासागर का जन्म 26 सतिंबर, 1820 को पश्चिम बंगाल के एक गाँव में हुआ था। अपनी प्रारंभिक शिक्षा पूरी करने के बाद वे कलकत्ता चले गए और वहाँ वर्ष 1829 से वर्ष 1841 के बीच उन्होंने संस्कृत वशिवदियालय से वेदांत, व्याकरण, साहित्य, अलंकार शास्त्र और नीतशास्त्र में नपुणता हासिल की, इस दौरान वर्ष 1839 में उन्हें संस्कृत और दर्शन में वशिषज्ञता के लिये वदियासागर की उपाधि दी गई। 21 वर्ष की आयु में ईश्वर चंद्र वदियासागर फोर्ट वलियम कॉलेज में संस्कृत विभाग के प्रमुख के रूप में शामिल हो गए। उनकी पुस्तक 'बोर्नो पोरचोय' को आज भी बांग्ला भाषा के अक्षर सीखने के लिये एक परिचयात्मक पुस्तक के रूप में उपयोग किया जाता है। यह उनके अथक संघर्ष का ही परिणाम था कि भारत की तत्कालीन सरकार ने वर्ष 1856 में विधवा पुनर्विवाह अधिनियम पारित किया। अन्य समाज सुधारकों के विपरीत ईश्वर चंद्र वदियासागर ने समाज को भीतर से बदलने की कोशिश की और इसी के परिणामस्वरूप बंगाल के रूढ़िवादी हदू ब्राह्मण समाज में विधवा पुनर्विवाह की शुरुआत हुई। 29 जुलाई, 1891 को 70 वर्ष की उम्र में कलकत्ता में उनका निधन हो गया।

